प्रश्न :– हर्षवर्धन उत्तर भारत का अंतिम हिन्दु शासक था स्पष्ट करें ।

गुप्तवंशो के पतन (550 ई.) के बाद उत्तर भारत में एक बार फिर से विकेन्द्रीकृत की स्थिति उत्पन्न हो गया । इस दौरान कई छोटे– छोटे राज्यों (जैसे– बंगाल , सिंध , बल्लभी , कश्मीर) का उदय हुआ । इसी दौरान उत्तर भारत में एक शक्तिशाली राजवंश पुष्यभूति वंश का उदय हुआ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक हर्षवर्धन हुआ । जिन्होने पुनः एक बार उत्तर भारत के विभिन्न राज्यों को जीत कर शासन के एकसुत्र में बांधने का प्रयास किया । इस बातों का प्रमाण विभिन्न स्त्रोतों से मिलता है । बांसखेड़ा (शाहजहॉपुर , उत्तरप्रदेश) तथा मधुवन (आजमगढ , उत्तराप्रदेश) ताम्रपत्र एंव पुलकेशीन द्वितीय के एहोल अभिलेख से हर्ष के विजय का प्रमाण मिलता है । बाणभट्ट के हर्षचरित तथा हर्ष द्वारा लिखित नाटक नागानंद , प्रियदर्शिका इत्यादि से भी इसके विजय की जानकारी मिलती है इसके अलावें इसके काल में आए चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग (630–644ई.) के विवरणों से पता चलता है ।

हर्ष के मृत्यु (647 ई.) के बाद भारत में पुनः विकेन्द्रीकृत की स्थिति उत्पन्न हुआ और इसके बाद कोई हिन्दु शासक न हुआ जो पुनः बिखरे भारत को संगठित कर शासन व्यवस्था स्थापित कर सके अन्ततः 1206 ई. में भारत पर मुस्लिम राज्य की स्थापना हुआ ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

हर्ष के द्वारा विजित प्रदेश निम्नलिखित है :–

पूर्वी भारत का अभियान

ह्वेनसांग लिखता है कि हर्षवर्धन ने दिग्विजय की नीति अपनाते हुए लगातार 6 वर्षो तक युद्ध किया इस दौरान उन्होने पांच भारत श्रावस्ती, कन्याकुब्ज , गौड़ , मिथिला और उत्कल को जीत लिया ।

शासक बनने के बाद हर्ष ने कन्नौज में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर पूर्वी अभियान पर निकला । इसका मुख्य उद्देश्य था शंशाक पर विजय प्राप्त करना हर्षचरित से पता चलता है कि हर्ष ने शंशाक पर विजय प्राप्त किया परन्तु शंशाक के मृत्यु (619–20ई.) के बाद ही गौड़ पर अधिकार कर सका । पूर्वी अभियान के परिणाम स्वरूप हर्षवर्धन को अन्य राज्यों की मित्रता प्राप्त हुई । इस दौरान उन्होने कन्नौज और बंगाल के नीच पड़ने वाले 17 राज्यों को अपने अधीन किया । मगध पर भी हर्ष का अधिकार हो गया ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

पश्चिमी अभियान

पूर्वी विजय के बाद हर्ष ने कन्नौज के पश्चिम के राज्यों को अपने साम्राज्य में मिलाने का काम किया । लेकिन देवगुप्त और शंशाक के आक्रमण के चलते इन क्षेत्रों में अशांति फैला रखा था । अतः हर्ष पुरी शक्ति के शक्ति सतलज और गंगा के मध्यवर्ती में पड़ने वाले राज्यों को जीता जैसे संकिसा , अंतरर्जीखेड़ा , काशीपुर , मथुरा , पारियात्र (जयपुर के निकट) जालंधर इत्यादि । इस प्रकार 6 वर्ष के अंदर (612 ई.)हर्षवर्धन ने पूर्व में उत्तर–पश्चिम बंगाल में पुण्ड्रवर्धन से लेकर पश्चिम में ब्यास तक अपना प्रभाव क्षेत्र स्थापित कर लिया ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

सिंध विजय

सिंध राज्य की सीमा हर्ष के राज्य से जा मिला । उस समय सिंध का राजा मान – मर्दन तथा । हर्ष ने इस पर आक्रमण किया तथा मान–मर्दन हर्ष की अधिनता स्वीकार कर लिया । बाणभट्ट लिखता है कि मान–मर्दन हर्ष को कर देता था । लेकिन ह्वेनसांग सिंध को एक शक्तिशाली स्वतंत्र राज्य के रूप में उल्लेख करता है।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

बल्लभी

बल्लभी (गुजरात) के शासक ध्रुवसेन द्वितीय एक शक्तिशाली राजा था और वह स्वतंत्र व्यवहार कर रहा था । ध्रुवसेन की सीमा हर्ष के सीमा से सटा हुआ था । हर्ष के लिए बल्लभी विजय का कई कारण था जैसे बल्लभी विजय से गुर्जर पर भी प्रभाव जम जाता इसके अलावे चालुक्यों से भी निपटने में आसान हो जाता । हर्ष ने ध्रुवसेन को पराजीत किया । तथा उसका अधिनता स्वीकार कर लिया हर्ष ने अपनी पुत्री का विवाह ध्रुवसेन से करवा दिया ।

हर्ष और पुलकेशिन द्वितीय

CAREER FOUNDATION

चालुक्यों सम्राट पुलकेशीन द्वितीय एक महत्वकांक्षी शासक था और गुजरात के बाद हर्ष की सीमा पुलकेशीन द्वितीय के सीम से जा लगा । एहोल अभिलेख से इन दोनो के बीच हुए युद्ध (618ई.) का पता चलता है । इस युद्ध में हर्ष को पराजय का मुख देखना पड़ा । और नर्मदा नदी दोनों की साम्राज्य सीमा तय हुआ ।

CAREER FOUNDATION
Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888

मध्य भारत

ह्वेनसांग उल्लेख करता है कि हर्ष ने जेजाक भुक्ति महेश्वरपुर (ग्वालियर) , गर्जर , और उज्जैन पर अपना अधिकार स्थापित किया ।

कश्मीर और नेपाल

ह्वेनसांग और बाणभट्ट दोनो दावा करते है कि हर्ष ने कश्मीर एंव नेपाल पर भी अधिकार किया था । ह्वेनसांग कहता है कि हर्ष ने कश्मीर से गौतम बुद्ध का दांत लाकर कन्नौज के निकट एक संघाराम में स्थापित किया । नेपाल में हर्षसवंत चलाता था ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का

उड़िसा अभियान

हर्ष अपने साम्राज्य विस्तार के दौरान 643 ई. में उड़िसा के गंजाम जिले पर आक्रमण किया और उड़िसा को अपने अधीन कर लिया ।

उपर्युक्त वर्णनों के आधार पर कह सकते है कि 7वीं शताब्दी में अपने सैनिक अभियानों के परिणामस्वरूप हर्षवर्द्धन ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की । के.एम.पणिक्कर के अनुसार , हर्ष के साम्राज्य की सीमा आसाम से कश्मीर तक तथा हिमालय से विध्यांचल तक विस्तृत थी । वह सम्पूर्ण उत्तरी भारत का स्वीमी बन बैठा । इस प्रकार

देखा जाय तों जीतने विस्तृत एंव सुंगठित साम्राज्य की स्थापना हर्ष ने किया उतना विस्तृत एंव सुसंगिठत साम्राज्य की स्थापना उसके बाद किसी हिन्दु शासक ने नही किया यही कारण है प्राचीन भारतीय इतिहास हर्षवर्धन को अंतिम हिन्दु सम्राट कहा जाता है ।

CAREER FOUNDATION
जुनून राष्ट्र सेवा का